07 / 02 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

अव्यक्त फरिश्ता स्थिति

➢➢ सम्पूर्ण पावन बनना

➳_ ➳ पतित पावन परम पिता परमात्मा बुला रहें हैं

→ बापदादा मेरा हाथ थामने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा रहे हैं।

→ एक बहुत तेज करेन्ट मेरे सारे शरीर मे दौड़ने लगा

→ पवित्रता की किरणों का अनन्त प्रवाह अंग-अंग में प्रवाहित हो रहा है

→ यह तीव्र प्रवाह शरीर के भान को समाप्त कर रहा है

- मेरा शरीर प्रकाश का बन गया
- हल्का हो गया
- धरती के आकर्षण को छोड़ ऊपर उड़ने लगा

➳_ ➳ अव्यक्त वतन की अनुभव

→ बापदादा के सामने जा कर बैठ जाती हूँ।

- बाबा के मस्तक से पवित्रता की तेज लाइट आ रही है
- पवित्रता की शक्ति से मुझे भरपूर कर रही है

→ अब निराकारी स्वरूप को धारण कर निराकारी वतन की ओर चल पड़ती हूँ

➳_ ➳ निराकारी वतन की अनुभव

- पतित पावन बिंदु बाप के बिल्कुल समीप जाकर बैठ जाती हूँ
- बिंदु बाप से आ रही पवित्रता की अनन्त किरणें मुझ बिंदु आत्मा पर पड़ रही हैं
- मुझ आत्मा पर चढ़ी विकारों की कट को भस्म कर मुझे पावन बना रही है
- मेरा पवित्रता का औरा बढ़ता जा रहा है

→ मैं रीयल गोल्ड बनती जा रही हूँ

➢➢ निराकारि निर्विकारी स्थिती

➳_ ➳ सम्पूर्ण निर्विकारी स्थिती

→ स्वयं को देख रही हूँ -

- अनादि निराकार स्वरूप में
- अपने घर परमधाम में

■ अपने निराकार शिव पिता परमात्मा के पास

→ मैं आत्मा एक चमकता हुआ सितारा

→ सच्चे सोने के समान अपनी आभा चारों और बिखेरती हूँ

→ सातों गुणों और अष्ट शक्तियों के अनन्त प्रकाश से प्रदीप्तमय हूँ

→ सम्पूर्ण निर्विकारी अनन्त ज्योतिर्मय स्वरूप

→ मैं आत्मा बन गई

■ 16 कला सम्पूर्ण,

■ सम्पूर्ण निर्विकारी,

■ मर्यादा पुरुषोत्तम

→ मैं ब्राह्मण आत्मा कितनी पदमा पदम सौभाग्यशाली हूँ

■ स्वयं भगवान ने ब्रह्मा मुख कमल द्वारा रचा है,

■ सर्वश्रेष्ठ बना दिया

■ सोलह कला संपूर्ण बना दिया

■ मर्यादा पुरुषोत्तम बना दिया

■ सम्पूर्ण निर्विकारी बना दिया

➳_ ➳ लौट जाती हूँ फरिश्ता स्वरूप में

■ लौकिक जीवन से जुड़ी सभी आत्माओ को अपने सामने इमर्ज करती हूँ

→ सभी को मैं यहाँ फरिश्ता रुप में देख रही हूँ

→ मुझ फरिश्ता की आत्मिक दृष्टि इन सब पर पड़ रही है

→ इन सबको प्योर वाइब्रेशन दे रही हूँ

→ उनकी कमियों को भस्म कर रही हूँ

■ इन सभी आत्माओ के लिए मेरे मन में शुभभावना और शुभकामना है

■ दुख देनेवालों को भी सुख देकर मेरे ब्रह्मा बाबा को मैं अपने इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन में फॉलो कर रही हू

■ ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखकर स्वयं को सम्पूर्णता की ओर बढ़ा रही हूँ